साहित्य-निधि - त्रैमासिक पत्रिका : 14 जुलाई 2017 के अंक में "आत्म-साधना" शीर्षक लेख में, संपादक द्वारा सुरेन्द्र गोखरू का परिचय |

संपादक की कलम से : श्री सुरेन्द्र गोखरू जन्म: (24 अगस्त 1935) - BITS पिलानी से मैकेनिकल इंजीनियरिंग डिग्री (1959) प्राप्त करने के बाद, 7 वर्ष तक परमाणु ऊर्जा संस्थान, ट्रॉम्बे मुंबई (BARC) में अणुशक्ति वैज्ञानिक रहे (1959 - 1966) | इस दौरान भविष्य के परमाणु ऊर्जा विकास के अंतर्गत, फास्ट ब्रीडर एटॉमिक पावर रिएक्टर के लिए, स्थानीय उपलब्ध परमाणु धातु थोरियम आधारित ईंधन का एक भाग - थोरियम पैलेट की यांत्रिक तकनीक (machining technology) का विकास किया | इसके अलावा "सेंटरलेस ग्राइंडिंग" (centreless grinding) की पुस्तक की रचना की, जो विश्व का इस विषय पर प्रथम प्रकाशन है (1967) | तत्पश्चात 18 वर्ष तक देश-विदेश में कार्यरत रहे - प्लानिंग मैनेजर, प्रोजेक्ट मैनेजर, जनरल मैनेजर और मैनेजमेंट सलाहकार पदों पर | फिर करीब 12 वर्ष तक इंडोनेशिया में एकाउंटिंग और मैटेरियल मैनेजमेंट सिस्टम के कंप्यूटर सॉफ्टवेयर का निर्माण कर, अपनी कंपनी खोलकर व्यवसाय किया | तकनीक व् प्रबंधन कार्य के आदान-प्रदान के लिए, आपने विश्व के विकसित देशों की यात्राएं की - यूनाइटेड किंगडम, स्वीडन, फ्रांस, सोवियत रूस, जर्मनी, जापान, स्विट्ज़रलैंड, ऑस्ट्रीया, आदि | इन यात्राओं में इन्होंने, वहां के नागरिकों के संपर्क में आकर, उनकी संस्कृति, सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन और व्यवस्था को जाना | अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित प्रतिभाओं में, आपका नाम दर्ज होता रहा है - संयुक्त राष्ट्र अमेरिका द्वारा प्रकाशित WHO'S WHO IN THE WORLD और अन्य प्रकाशन WHO'S WHO IN AUSTRALIA AND THE FAR EAST, AMERICAN BIOGRAPHICAL INSTITUTE, INTERNATIONAL BIOGRAPHICAL INSTITUTE, CAMBRIDGE, ENGLAND आदि में |

63 वर्ष की आयु में, इनकी छोटी बेटी की शादी के पश्चात्, स्थाई सुख की खोज में, इन्होंने गृहस्थ संन्यासी जीवन अपना लिया | सर्वप्रथम दुनियादारी के आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक रीति-रिवाजों और अनुष्ठानों से स्वयं को मुक्त कर लिया | इस प्रकार शोध के लिए पर्याप्त समय मिल जाने से, इन्होंने कई धर्म, संप्रदाय, दर्शन, योग, युग, ब्रह्माण्ड, मस्तिष्क, मन, बुद्धि, सुख दुःख, कर्म, ध्यान आदि विषयों पर धार्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक और तार्किक दृष्टिकोण से मौलिक अध्ययन किया | अंत में इनको यह स्पष्ट हो गया कि शाश्वत सुख-शांति केवल निजी आत्मा में है | अतः इनके जीवन का एकमात्र उद्देश्य "आत्म पुरुषार्थ" से आत्मा का अनुभव करना रह गया | अक्टूबर 2016 में इनको "आत्म अनुभूति" की झलक मिली और इसके प्राप्त अप्रत्याशित उपलब्धियाँ, इनके द्वारा लिखित "आत्मा" के लेख के अंत में वर्णित हैं |